चिकेनकोप्प श्री चन्नवीर शरण के

श्री वचन

(ज्ञान की बात - विस्मृत मानव से)



संकलनकर्ता

श्री चन्नवीरेशप्रिय नापदा

-

हिन्दी रूपांतर

डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर प्रेमी

हिन्दी प्रोफेसर, बेंगलूर विश्वविद्यालय,
बेंगलूर-५६.

-

बन्नंजे गोविंदाचार्य
की
मोती सी बात



श्री शरणर सुवासिनी बळग
होसपेटे



शुद्ध चाल, शुद्ध बोल, शुद्ध तन, शुद्ध मन, शुद्ध भाव
ऐसे पंचतीर्थों से युक्त मर्त्य में रहे आपके
शरणों को दिखाने, मुझे जिलाओ चन्नमल्लिकार्जुन

-अक्कमहादेवी

"For Mercy has a human heart,
Pity, a human face ;
and Love the human form divine,
and Peace the human dress"

- William Blake

शुद्ध तन, शुद्ध मन, शुद्ध भाववालों को
मुझे एकबार दिखाओ।
चाल में सदाचार, बोल में शिवागम
नित्य शुद्धों को मुझे एकबार दिखाओ।
अंधतम को मेरे उलट पलट अतः बाह्य एक हो खड़े
आपके शरणों को मुझे एकबार दिखाओ
हे चन्नमल्लिकार्जुन

-अक्कमहादेवी

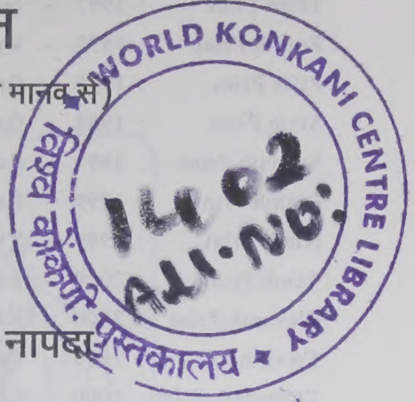
ॐ

॥ श्री जय शरण ॥

चिकेनकोप्प श्री चन्नवीर शरण के

श्री वचन

(ज्ञान की बात - विस्मृत मानव से)



संकलनकर्ता

श्री चन्नवीरेशप्रिय नापदा

-

हिन्दी रूपांतर

डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर प्रेमी

हिन्दी प्रोफेसर, बेंगलूर विश्वविद्यालय,

बेंगलूर-५६.

-

बन्नंजे गोविंदाचार्य

की

मोती सी बात



श्री शरणर सुवासिनी बळग

होसपेटे

Chikenakoppa Shri Channaveera Sharana **'SHREE NUDIGALU'** (Arivina Nudi Marevina Manavage) Compiler : *Shree Channaveeresha Priya Napada*

KANNADA :

First Print	: 1997	-	Ratha Saptami
Second Print	: 1997	-	Bhavaikyadashi
Third Print	: 1997	-	Jyesta Bahula Shasti
Fourth Print	: 1997	-	Vysya Poornima
Fifth Print	: 1998	-	Guru Poornima
Sixth Print	: 1998	-	Goga Navami
Seventh Print	: 1999	-	Ratha Saptami
Eighth Print	: 1999	-	Karaveera Vratam
Ninth Print	: 1999	-	Vidyaranya Aradhane
Tenth Print	: 2000	-	Ratha Saptami
Eleventh Print	: 2000	-	Karaveera Vratam
Twelfth Print	: 2000	-	Panchakshari Gavayigala Punyadina
Thirteenth Print	: 2000	-	Children's Day

HINDI :

First Print	: 2000	-	X' Mas Day 26th Dec. 2000

For Free Distribution

ಧರ್ಮಾರ್ಥ

Copies : 1000

Pages : 14 + (vi)

कृतयुग में तप श्रेष्ठ धर्म था। त्रेतायुग में ज्ञान को और व्दापरयुग में यज्ञ को श्रेष्ठ धर्म माना। परंतु कलियुग में दान को ही श्रेष्ठ धर्म माना गया। -मनु

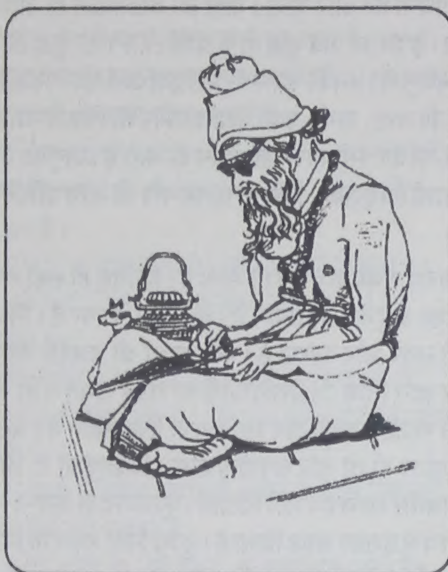
Published by : Shree Sharanara Suvasini Balaga,
Hospet -583 203.

Printed at : **Asha Graphics Pvt. Ltd.**
Kumarapatnam-581 123. (Harihar)
✆ : (08373) 31471, 30921

Sri Sharana Sahitya Samskruti : 48

॥ वंदे शिवं शरणं ॥





ज्ञान योगी - कर्मयोगी - भक्ति योगी

चिकेनकोप्प

श्री चेन्नवीर शरण

सुवासिनियों की बात

सब से पकार, परिपूर्णता की ओर बढ़े महामहिम पूज्य श्री चन्नवीर शरण का स्थान उनका अपना ही है। सागर सागरोपम, उपमातीत, नंगे बैरागी, बगल में झोली, कंधे पर कंबल, दाहिने कर में जपमाला, बाए कर में दंड़, गले में रुद्राक्षीमाला - त्रिपुंडधारी धोती टोपी, भूख-प्यास रहित प्रसादकाय, पाद में पादुका, सदा भ्रमणशील, बिन भेद-भाव के सभी कौम साथ, विविध स्तर के लोगों के साथ मिलकर भी आप आप ही रहकर जो देखते उन्हें उन्हीं की तरह दिखनेवाला भाग्यरूप। हँसाते-रुलाते, गले लगाते, निज संस्कार देने अनवरत अविश्रांत परिश्रमी थे परमगुरु, सिद्धगुरु।

मौनी-घनमौनी जपानुष्ठान के प्राण, सदा रहा-भरा अंतर में एक होकर, निजानंद, परमानंद प्राप्ति की साधना की ओर यात्रा। बाह्य को देखनेवाले ही अधिक। अंतर को देखने आंतरिक दृष्टि चाहिए। हृदय का पात्र शुद्ध होना चाहिए। मन को शुद्ध होना चाहिए। वे श्रद्धा से पुकारनेवालों की कामधेनु थे। उनकी संकल्प-सिद्धियाँ असंख्य-गरजते जल प्रपात की तरह, कौंधनेवाली बिजली की तरह, कभी-कभी प्रशांत सागर सी निकलनेवाली प्रसादगणी गागर में सागर सी है। इसमें वाणी का चमत्कार नहीं। ज्ञान की बातें हैं। अनुभव के आंतरिक स्फुरण के अंतः प्रकाश की श्रीवाणी है। इसका, विस्मृत मानव गाय की तरह प्रतिदिन जुगाली कर सकता है।

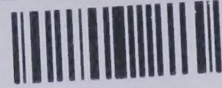
युगावतारी अपरुप शरण के दर्शन ही भाग्य है। किंचित् ही सही सेवा करने जो आगे बढ़े वे पुण्यभागी हैं। उनका अनुभव अमृतपान है। वह सुधा-सागर है। निजानंद की अक्षयनिधि है। उसमें जितना भी उतरे और गहराई है। परंतु पूज्य श्री चन्नवीर की विशिष्टता को जानना कठिण होने से अपार ज्ञान निधि की प्रसादवाणी का संग्रह संभव न हो सका है। उनके निकट के भक्तों की स्मृति से संग्रहित वाणी अब साहित्य के लिए महान देन बन गयी है। यदि इसका दुसरी भाषाओं में रूपांतर हो तो और उपयोगी होगा। जिज्ञाषुओं के लिए भी इसका प्रयोजन है। इस दिशा में श्री चन्नवीर शरण हमें मार्ग दिखाये। पूज्यपाद के अनन्य भक्त श्री चन्नवीरेशप्रिय नापदा जी ने कम समय में इसका संग्रह किया है। पूज्य पिता शरण के निकटवर्तियों से सुनकर प्राप्त अमूल्य प्रसादवाणी आगे की पीढ़ी के लिए देन हो यह आकांक्षा बळग की है।

हमारा तो सिर्फ प्रयत्न है। फल पूण्य की करूणा पर। उनकी वाणी को उन्हीं को अर्पित करने का सेवा कार्य। ऐसे कार्य के लिए आगे आये दानी श्री शरण के कृपा पात्र बने हैं। पसार की जिम्मेदारी श्री शरणर सुवासिनी बळग की है। कांचन रूपी कामिनी के पीछे न पड़ने का संकल्प लेकर इस ज्ञानवाणी के प्रसार में लगे हैं। पाठक इसका सदुपयोग करें तो हमारा श्रम सार्थक होगा।

श्री शरण की कृपा से डॉ. टी.जी. प्रभाशंकरजी ने इसका हिन्दी अनुवाद किया है जो बेंगलूर विश्वविद्यालयके हिन्दी प्रोफेसर तथा 'बजव मार्ग' हिन्दी पत्रिका के प्रधान संपादक भी हैं। हम उनके प्रति आभारी हैं।

इस की छपाई के लिए जिनोंने मदद की है उन सब के प्राति 'श्री शरण सुवासिनी बळग' आभारी है।

॥ इति शुभं ॥



मोती - सी बात

भगवान के श्री पादों के शरण में जो आये वे शरण हैं।
भगवान ने दूर रहनेवाले शास्त्र ग्रंथ के पीटते झगड़ते हैं।
आगम ही ज्ञान की सीमा बनती है।
मस्तिष्क खाली होते हैं। राग-द्वेष ही वेदांत बनते हैं।
क्यों कि पढ़ाई से जो प्राप्त हुआ वह 'God' नहीं 'Ego' है।
पहले 'E' से मुक्त होना है। अंत 'D' को मिलना है।
उसके लिए 'अहं' को पार करना है। ऊँचाई पर चढ़ना है।
चिकेनकोप्पद चन्नवीर शरण इसी रास्ते में बढ़े थे;
वे अंदर ही अंदर पके थे। और ऐसे पके महानों के सामने झुके थे ।
बात बढ़ने से झगड़ा होता है। मौन से बोल निकलने से वह मोती बव झड़ता है।
चन्नवीर शरण के 'श्री वचन' सचमुच मुक्त फल हैं।

उड़ुपि
होसपेटे

बन्नंजे गोविंदाचार्य

A PEARL

Chikenakoppa Channaveera Sharana was the one realised soul who had surrendered at the lotus feet of the Almighty.

Those who stand far from the Almighty tend to fight through scriptures become barrier to knowledge. Head becomes empty; passion and hatred enact philosophy.

What we realised through studies was not 'God; but 'Ego' first, the letter 'E' should be eliminated and then 'D' should be added at the end. We should hence, go beyond 'Ego' (Aham). We should rise higher and higher.

Channaveera Sharana has traversed on this path. He has ripped within; and he knelt before those who had ripened earlier.

Word for word results in fighting. When word issues out from silence a pearl evolves. And, Sharana's pearl belongs to this genre.

Udupi - ***Bannanje Govindacharya***
Hospet

चिकेनकोप्प श्री चन्नवीर शरण के

श्री वचन

''ज्ञान की बात - विस्मृत मानव से''

- भगवान कहाँ नहीं है ? जो भगवान के रूप में है, वे विजेता है।
- सागर पार किनारे पहुँचने धर्म का पताका।
- आज का युग धर्म से दूर; पाप कर्म के लिए अति समीप है।
- धरती का भोग जितना भी हो स्थिर नहीं; हर का भोग स्थिर है, शाश्वत है।
- शून्य निर्वात प्रदेश है मुक्त प्रदेश है, पूर्ण और परिपूर्ण। उससे मिलना ही लक्ष्य है महान् लक्ष्य !!
- भवसागर पार होना है, जीतना है, किनारे पहुँचना है। यही जीवन पथ है।
- तैरना सीखने पानी में उतरना पड़ता है। किनारे बैठे देखते रहने से न होगा। साधना का मार्ग भी इसी तरह है।
- मैं, मेरा कहने से कैसे बुद्धिमान होंगे ! तुम, तुम्हारा कहना बुद्धिमानी है।
- मन को स्पर्श कर चलने का हठ-चाहिए। मन को दबाकर-चलने का हठ नहीं।
- भगवान ने मनुष्य में ज्ञान-विस्मृति, दोष-सही, पाप-पुण्य दोनों रखकर इस भव संसार में भेजा है। और देखता रहा है।
- मनुष्य जन्म तमस का नहीं ज्योति से महा ज्योति की ओर बढने और मिलने के लिए है।
- जो पाप-पुण्य का ज्ञान रखता है वह जीतता है, सिद्ध बनता है। जो पाप-पुण्य का ज्ञान नहीं रखता है वह मूर्ख है, हारता जाता है।
- निज भक्ति में महान शक्ति है उसी से भव से मुक्ति मिलती है।
- तुममें 'मैं' का मुझ में 'तुम' का साथ होना है। तब मैं ही तुम, तुम ही मैं। तब है क्या बचा?
- भव की नाव में छेद होता ही है, इसी लिए भगवान की नाव में चढ़ना है।
- भाव जैसा भगवान है। मन जैसा महादेव !
- भव के संकट को सुननेवाले होते हैं, उस कष्ट को दूर करने वाले नहीं। सिर्फ नाटक करते है, इसीलिए यह संकट आ पड़ा है।
- अच्छा-बुरा दोनों रहते हैं। अच्छे को रख लीजिए और बुरे को महात्मा की झोली में डाल दीजिए।
- साधना की स्थिति में चढ़ना-उतरना होता है; सिद्ध प्राप्ति के बाद स्थित प्रज्ञा।
- विचार जैसे आचरण और आचरण जैसे विचार। इसीलिए पहले अच्छे विचार करना चाहिए।
- मरकर जीना है। जीकर मरना नहीं। जीकर मृतवत् भी नहीं रहना-चाहिए।
- छिपाव का सुख सुख नहीं, सही सुख सहनशीलता में है।
- इस तन को मंत्रपिंड होना है। मांसपिंड को नष्ट होना है। अंग लिंग में, लिंग अंग में एक होना है। उसी के लिए सज्जनों का संग करना है।

- शिवानुभव में ज्ञान पाना है, परिशुद्ध होना है। खोना है, पाना है, तब वह आत्मानुभव प्राप्त होता है।
- गृहस्थों से कुशल पूछने के बदले यह पूछना अच्छा है आपकी कैसी फजीहत है।
- ज्ञान बोध पाकर चलने से जो भी कहे वह तत्व है, परतत्व है।
- मानव सृष्टि-चिंतन करता है तो महादेव समष्टि-चिंतन करते हैं।
- शब्द को मौन होना है। मौन में निःशब्द होना है और निःशब्द में लीन होना है।
- कैंकर्य (सेवा-भाव) कायरता नहीं है। यह सच्चा और साहस का कार्य है।
- बुरा करनेवाले के प्रति भला करना ही धर्म है।
- धनत्व पाने पर शिव क्यों मिलते नहीं ? शिव दौड आते हैं।
- जितेन्द्रियत्व कठिन है मगर असंभव नहीं। जितेन्द्रिय ही अतीन्द्रिय है।
- गलती कोई गलती नहीं। गिरना सहज है। परंतु बार बार गलती करना नहीं। सचेत रहना है, सतर्क रहना है।
- जो ज्ञानी है वह मौन रहता है। आधा ज्ञान रखनेवाला अधिक बोलता है।
- तन-मन-धन के सदुपयोग के लिए ही मनुष्य जन्म है, दुरुपयोग के लिए नहीं।
- किनारे पहुँचने का लक्ष्य चाहिए। गुरुकृपा चाहिए। उसका ज्ञान चाहिए और साधना भी चाहिए।
- कमाओ, कमाओ, कमाते कमाते उसे पाओ, उसे छोड़ो।
- भगवान से कितना पाया? कितना लौटाया? बता सकते हो ?
- मनुष्यों के साथ प्रंवचना संभव है। परंतु शिव के साथ कैसे संभव है ?
- जब हमारा अपना ही है बिछाने ओढने तो दूसरों का क्यों चाहना ? तुम अपने को जीतोगे तब यह संभव है।
- हमें अपने आचरण के लिए दूसरों से डरना क्यों? लज्जित होना क्यों?
- हमारी कमाई का वितरण खोटा नहीं होना चाहिए। सच्चा होना चाहिए। तराजू को सोना तोलने की तराजू जैसे होना चाहिए।
- सीडी चढ़ना कितना कठिन है जानते हो न? उतरना कितना आसान है? चढ़नेवाला चढ़ता ही रहे यही साधना है !
- नर हर हो सकता है, हर नर जैसे दिख सकता है परंतु हर नर न हो सकता।
- तुम, तुम्हारा यह सच्चा ज्ञान है, मैं मेरा यही बडी भूल है।
- पाप पाप है अपवित्र अपवित्र ही है, चाहे वह छोटे आकार में हो या बड़े आकार में।
- जीवन्मुक्ति मरने के बाद नहीं। जीवित रहते ही पाना जीवन मुक्ति है।
- पेड-पौधे में, पशु-पक्षी में जो उपकार बुद्धि है वह मनुष्य में नहीं तो क्या कहे ?
- जीव भाव नष्ट होकर शिवभाव जब जागृत होता है तभी सच्चे ज्ञान का मार्ग सुगम है।
- तारीफ करनेवाले बहुत होंगे। अब निंदक चाहिए। तभी सचाई को कसौटी में कसना संभव है।

- पूर्व का पुण्य आज को, आज का कल को भोगना पड़ता है। परंतु आज के पाप का फल इसी जन्म में भोगना पड़ेगा।
- दान का ऋण इसी जन्म में चुका देना चाहिए। तब तो फिर जन्म लेने का भय नहीं रहता है।
- शिव बहुत चतुर सी.ऐ.डी. है। वह कब कैसे किस रूप में आता है, पता चलता है क्या?
- 'सेवा' का मतलब क्या है? पुराने ऋण को सूद समेत चुक्ता करने का एक सरल मार्ग है।
- सत्य की बोल, धर्म की चाल। इस जन्म से नाता तोड।
- पैदा होने की भूल हो चुकी है। फिर जन्मना न हो, ऐसा रहना सीखना चाहिए। वही ज्ञान है।
- बड़ों का रास्ता बड़ा ही हो। छोटा क्यों हो? उसे आलोकित करते रहना चाहिए और अंधकार को नष्ट करते रहना चाहिए।
- हाइब्रिड फसल! लोग भी हाइब्रिड, तुर्त फल पूछनेवाले भी अधिक हुए हैं और देनेवाले भी, और दिलानेवाले भी अधिक हुए हैं।
- गृहस्थ धर्म बहुत श्रेष्ठ है। उसका ठीक निर्वाह न हो तो वह उतना ही कनिष्ठ है।
- पागलपन! वेमन का पागलपन। वही सच्चा पागलपन है।
- अच्छी आदत चाहिए। और अच्छे के लिए हठ भी चाहिए।
- भूदान, वस्त्रदान, गोदान करनेवाले पुण्यात्माओं के दर्शन दुर्लभ है। परंतु भूदान, वस्त्रदान और गोदान करना उस से भी कठिण कार्य है।
- सोने को कभी जंग नहीं लगता। चाहे वह कूडे में रहे, चाहे महल में। उसका खरापन वैसे ही रहता है।
- अंग पर लिंग जो धारण करता है उसका नमन करूँगा। अंग ही जिसका लिंग हो उसका तो बराबर नमन करूँगा और उसे शिव मानूँगा।
- अधर्म की कमाई, बचत, व्यय सब उसी के लिए। भगवान को कोई धोखा दे सकता है।
- खाने-पहनने का हिसाब रखा है ? कितने मन गेहू, चावल, ज्वार, गुड खाये हैं ? अपनी कमाई ही अमिट संपत्ति है।
- उपकार कर सकते हो तो करो। मगर अपकार मत करो। अपमानित मनुष्य न बनो। इतनी सारी कमाई में तुम्हारी अपनी कितनी है। तुम्हारे साथ कितनी रहती है। तुम्हारे साथ कितनी आती है ? इसका पता है क्या ?
- सब में हेरपेर! कोई समानता नहीं। तुम पूछोगे कि वह दिशाहीन, देशहीन अनादि शिव समदर्शी कैसे ?
- ऐसा चले, ऐसा बोले और ऐसा जिये कि अंतरात्मा माने और सुने।
- अंदर के आईने को जरा देखना और उसके समान चलना सीख जाय तो इस जन्म में और क्या चाहिए?
- कर्म की थाती निकालो और नष्ट करो। धर्म की थाती कमाओ और समुद्ध करो।
- आँखें है दृष्टि नहीं। यह दृष्टी का दोष नहीं। दृष्टि में ही दोष हो तो क्या करें ?

- इंन्द्रियों को हमारे अधीन और हमारे अधिकार में रखना चाहिए। उनके पीछे हम को चलना नहीं चाहिए।
- बिना कायक (श्रम) खाना गोमांस खाने के समान है।
- 'लज्जा' ढ़ाई आखर का है। इसे कितने ही बडे बडे लोगों ने छोड़ दिया है न ?
- देखते चलना चाहिए। चलकर देखना चाहिए। ऊपर नहीं, पैरों में आँखें होनी चाहिए।
- तुम कौन हो ? कहाँ से आये ? कहाँ जाओगे क्या तुम्हें इसकी खबर है ?
- तुम पैदा क्यों हो, मरने को ? तुम मरते क्यों हो फिर पैदा होने ? इसे जानकर चलने को ही मनुज जन्म है।
- प्रामाणिक जिंदगी के लिए यहाँ नहीं वहाँ (भगवान के यहाँ) मूल्य है, स्थान है।
- केंचुली छोडकर बाहर आने के बाद साँप फिर केंचुली में आयेगा। तो विरक्त होकर फिर अनुरक्त होना क्यों ?
- पुराण प्रवचन बाँचनेवाले भी उससे अलग नहीं। इसीलिए प्रवचन करनेवाले को वैसा जीकर, प्रवचन करना चाहिए।
- मुफत में मिले तो उसका कोई मूल्य नहीं। पसीने का मूल्य हमेशा रहता है।
- पुण्य कमाना चाहिए और पाप मिटाना। उसके लिए हर कदम सतर्क रहना चाहिए।
- पूजा का सच्चा फल शून्य को देखना नहीं। दूसरों को देना और रक्षा करना है।
- मठ-मंदिरों के पैसे खानेवालों को मरणांतक रोग लगेगा ही।
- मन की शुद्धि सच्ची शुद्धि है। बाह्य शुद्धि दिखावा है।
- मिट्टी की काया मिट्टी को। काया का कार्य शिव को अर्पित होना।
- मनुष्यों का संग बहुत हुआ। अंब शिव का सानिध्य चाहिए।
- बातों में चालाकी बहुत। बुद्धिमानी भी बहुत। ज्ञान की गहराई छूने को संघर्ष।
- सुहागिनों की इज्ञत करना गृहस्थ धर्म का प्रमुख अंग है।
- गुरु का घर छोटा हो तो क्या हुआ ? राजमहल बड़ा हो तो क्या ?
- काम क्रोधादि अरिषड्वर्ग वैसे तो नहीं चाहिए। यदि शुद्धिकृत हो तो चाहिए।
- जो नहीं चाहिए उसे कराती है चित्तकी प्रवृत्ति। जो चाहिए उसे कराती है चित्त की निवृत्ति।
- अति भोगी सदा रोगी। मितं भोगी निरोगी।
- प्रकृति को विकृत करनेवाला अधम है। प्रकृति को यथा स्थिति में रखनेवाला मध्यम है। प्रकृति को 'पराकृति' में बदलनेवाला श्रेष्ठ है।
- विषय-वासना को छोडकर जीवात्मा रह न सकती। रस को छोडकर न रह सकती अंतरात्मा।
- आहार तो जीवन के लिए आवश्यक है। परंतु कब किस प्रकार का आहर लेना चाहिए इस की समझ न चाहिए क्या ?
- मनुष्य को अनुभव अवशयक। साथ प्रतिभा भी हो।

- प्राण हीन कोई प्राणी जगत में नहीं। मगर चैतन्य सब में नहीं।
- काया की शुद्धि जितनी अवश्यक है उससे भी ज्यादा अवश्यक है प्राणशुद्धि।
- खण्ड भाव का अखण्ड भाव के साथ मिलना ही मानवीय मूल्य है।
- गुरुपदेश रूपी दीप शिष्य के अंतर-बाह्य तम को मिटा सकता है।
- भेद-भाव घर-संसार के बाहर नहीं, अंदर है।
- शरण और संतों की आँखें दो ही। परंतु देखनेवालों की आँखें हजारों।
- अभेद का ज्ञान ही परिपूर्ण महाज्ञान है।
- जो सकल निष्कल वस्तुनिष्ठ है वही ब्रह्मज्ञान है।
- शुद्ध आचरण ही शुद्ध भाव की बुनियाद है और दिव्य मार्ग की दिक्सूची है।
- जिस घर में स्त्री आँसू बहाती है वह घर विनाश की ओर है।
- जहाँ स्त्री पूजित होती है वहाँ देवताएँ बसते हैं।
- वाक् और अर्थ के समान पार्वती-परमेश्वर का संयोग है।
- गुरु ही त्रिमूर्ति स्वरूप परमेश्वर है।
- सत्यवानों और नीतिवानों को साक्षात् परमेश्वर भी कूछ न कर सकेगा।
- दुरहंकार रूपी अग्नि अपने को ही नहीं, सबको हानि पहुँचाती है।
- 'ऋतु आने पर फल होय' यह सृष्टि नियम है। तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए।
- मस्त हाथी को छोटा-सा अंकुश नियंत्रित करता है। उसी तरह गुरुदृष्टि मदगज रूपी शिष्य के लिए अंकुश के समान है।
- 'अंहब्रह्मास्मि' कहने से ब्रह्म नहीं बन सकता। उसके लिए आंतरिक साधना की आवश्यकता है।
- जिनको दुष्टमार्ग रक्तगत हो गया है, उनमें न्याय, नीति और धर्म कहाँ?
- पदार्थ अशुद्ध और 'प्रसाद' परिशुद्ध होता है। अतः पदार्थ को 'प्रसाद' होना चाहिए।
- अशुद्ध कामवासना से भवरोग और शुद्ध काम भाव से शिवयोग है।
- स्वय में ही पर है और पर में ही स्वय है।
- अवस्था त्रयों को जीतकर गुणत्रयों को दूर रखकर तूर्य तक पहुँचना ही महान साधना है।
- आचरण का अर्थ है अच्छी चाल। वह शुद्ध सोना है। वह कहीं भी रहे मूल्यवान् है।
- जड़े आचरण, कंदाचार आदि धीरे-धीरे मूल्य रहित हो जाते हैं। तत्व कालातीत और अमूल्य है। इसलिए वह कभी पुराना नहीं होता। उसका अनुष्ठान अवश्यक है।
- एक दूसरे के साथ जीवन बिताना ही सह-जीवन है।
- भक्ति बाहर दिखाई न पड़ती है। वह दिखावा नहीं। वह आंतरिक है। वह आप ही आप उमडती है।
- अंग अल्प चेतन है तो लिंग पूर्ण चेतन है।
- विशुद्धता और विशालता ये जीवन की दो आँखें हैं।

- मानसिक शक्ति ही महाशक्ति है। वह आत्म शक्ति के लिए पूरक है और वह सिद्धौषध है।
- विचारहीन आचरण और आचरणहीन विचार दोनों अंधे और लंगडे के समान है। दोनों का एक होना मुख्य है।
- ज्ञान अभ्यास बल पर प्राप्त होता है तो आचार क्रिया के बल पर।
- आचरण में जो सदाचारी है उनके वचन शिवागम है।
- पदार्थ को प्रसाद बनने के लिए और पर को अपर होने समर्पणभाव चाहिए।
- लिंगभोगोपभोगी ही सच्चे वीरशैव है।
- कुछ लोगों का वचन है, कठोर परंतु, हृदय मृदु। और कुछ लोग गोमुखव्याघ्र होते हैं।
- मैं मेरा यह एक भ्रम है। हम सब यात्रिक है। हम जहाँ रहते हैं वह धर्मशाला, प्रवासी बंगला या सराई है।
- ऋण भार अधिक होकर उसे न चुकाने पर फिर फिर आना पड़ता है।
- मन तोडने से घर तोडने देर न होती। परंतु अंतडे को काटना न चाहिए। अंकुर को निकलते रहना चाहिए।
- सास और बहू दोनों मिल जुलकर रहे तो वह घर महागृह है, स्वर्ग है। वह धन्यो गृहस्थाश्रम है।
- दासोह भाव अत्यंत आसान भी है और कठिन भी।
- फटे दूध से जैसे मक्खन नहीं निकलता वैसे ही चंचल मन से सिद्धि प्राप्त न होती।
- शिव-शिवे, हरि-हर, अल्ला-एसु, कृष्ण-राम, बुद्ध आदि दो अक्षरों के जप से जीवन -नौका पार होती।
- अनन्य भाव से विश्वास करनेवाले भक्त को भगवान कभी भी न छोड़ता।
- पतिव्रता का शाप 'हर' को भी लग सकता है।
- कृत-त्रेता-द्वापर ही क्यों आज के कलियुग के महानुभावों को भी संकष्टों से मुक्ति नहीं। तब हमारी तुह्मारी हालत कौन पूछे ?
- नीच जितने भी ऊँचे स्थान पर रहे नीच ही होता है।
- करूणाभाव ही स्वर्ग है और निष्कारूण्य ही नरक है।
- संकट आने पर ही भक्ति की शक्ति की पहचान होती है।
- विद्यावान को विनय भूषण है तो ज्ञानी के लिए शांत-संयम भाव ही भूषण है।
- जड़ में शक्ति होने पर ही पेड़ में रसयुक्त फल मिलेगा।
- सत्यवान की जैसे भी परीक्षा हो वे और उज्ज्वल दिखते हैं।
- सुख भोग मृग-जल-सा क्षणिक है, अशाश्वत है। अतः उसके पीछे न पड़े।
- सेवा करना धर्म है। परंतु वह मार्ग सुगम नहीं।
- आत्मप्रकाश सम और कोई प्रकाश नहीं।

- कामवासना को शुद्ध प्रेम में बदलना ही सत्य साधना है।
- '०' यह शून्य निराकार में साकार है और साकार में निराकार है।
- शिवानुभव से चित्तशुद्धि, भावशुद्धि, शिवानंद से आत्मशुद्धि और आत्मानुभव।
- रूप अनेक स्वरूप एक ही। रूप भिन्न, स्वरूप अभिन्न।
- आँख को देखना नहीं, आँख के अंदर के चैतन्य को देखना चाहिए।
- अंग-आत्मा के विकास का सिद्धांत ही जीवन सिद्धांत है।
- प्रणव पंचाक्षरी ही षडक्षर मंत्र है। यही वीरशैव पूजा या जप के लिए मूलमंत्र है।
- कथनी का पक्व होना काफी नहीं, मन को पकना चाहिए।
- सद्गुरु का प्रबोध मिलेगा तो भोगी योगी बन सकता है।
- अंग की इच्छा के लिए भोगनेवाला ही भोगी है। लिंगार्पित कर उपभोग करनेवाला योगी है।
- सती-पति विरस भक्ति दूध में मिला खटास है।
- साधना पथ के लिए अडचन ही सीडियाँ है। सीडियाँ चढ़कर ही बढ़ना है।
- मेरा सब कुछ तुम्हारा होने पर अपना क्या है देने ? मुझे ही तुम पाओ। यही अंतिम है।
- अपने को साधना से दिखाना ही महा साधना है। अपने में आप महासुखी है।
- 'मैं' का भाव मिटकर 'अपना' का भाव का रहना ही आत्मज्ञान है, और वही भव का विस्मरण है।
- भ्रांति से मुक्त हुए बिना शांति कैसे प्राप्त हो।
- अच्छाई की रक्षा करने के लिए गणाचार आवश्यक है। नहीं तो जगत् बुराई का साम्राज्य बन जायेगा।
- लक्ष्य साधना के लिए हठ चाहिए और मनोबल भी।
- भूदेवी क्षमादेवी है। अतः सभी माताएँ भूदेवी के समान है। वह सब को क्षम कर देगी।
- लज्ञा रहित जीवन जीवन है क्या ? लज्ञाहीन क्या मनुष्य है ?
- दया-शांति-सत्य-कायक आदि बीज बोने पर क्या विश्वकल्याण का सपना साकार न होगा।
- पेट भर खाना, आँख भर नींद और हाथ भर काम ये सब चाहिए ही। साथ में साधना भी चाहिए।
- आत्म ज्ञान की भाषा कोई भी हो, वह कहीं से भी आये।
- हम सब ग्वाले हैं। इंद्रिय-मन-बुद्धि ही पशु है। विवेक रूपी रस्सी से कसकर पकड़े रहना है।
- मतिहीन मस्तिष्क से भी कभी-कभी महान् कार्य की साधना हो सकती है।
- ध्यान एक आंतरिक युद्ध है। हमें अपनी रक्ष करते आक्रमण करना चाहिए।
- निर्गुण का ध्यान कठिन है। सगुण के ध्यान करने की आदत हो तो आसान होता है।
- निजमुक्ति पथ में ही मानव जीवन की सार्थकता है।
- अब जो शांति मिलेगी वह बड़ी नहीं। 'उसके अंत में उसके साथ मिलने वाली शांति ही चिरशांति है।

- सभी कमाते पेट भरने को। फिर भी यह ठीक नहीं है सतर्क मानव को।
- मन की पसंद के अनुसार चलना ही शिव प्रेम पाने का पासपोर्ट है।
- पृथ्वी घूमती है। उसके घूमने से ही रात-दिन। उसके पीछे 'वह' है इसलिए सब ठीक चलता है।
- तन रूपी खेत निराना पड़ता है। एक बार करने से ठीक न होगा।
- आत्म-ज्ञान विकास का क्रम है। आत्म बेचना अवनति का क्रम है। विकास का क्रम हमारा होना चाहिए।
- अंदर की गुरु को सुनो। अम्मा, अम्मा कहते शिशु-सा पीछा करो। भूलकर पछतावो मत।
- सभी मानवों में शिव है। साथ शैतान भी है। अतः मानव के आंतर्य को समझना आसान नहीं।
- यह सब भगवान की संपत्ति है। फिर भी बाडे में रहना पागलों का काम है।
- आंतरात्मा को सुननेवालों को और किस की फिक्र है ?
- सारा संकल्प नष्ट होने पर द्वन्द्व कहाँ? सिर्फ अस्तित्व। वही है पूर्ण, परिपूर्ण।
- लोहा परुषमणि से सोना बन सकता है। परंतु वह परुषमणि बन सकता है क्या ?
- ज्ञान का अर्थ जानना, क्रिया का अर्थ ज्ञान के अनुसार चलना, एक दूसरे का पूरक है।
- केवल कथनी में बुद्धिमान लोग है। लोगों की आँखों में धूल झोंक सकते हैं। परंतु भगवान की आँखों में धूल झोंक सकते हैं क्या ?
- करनी में कथनी और कथनी में करनी का एक होना ही साधना है, सार्थकता है।
- आप अपने को खोकर, अपनापन रखकर जो स्वयं बनता है वही संत है, महंत है।
- अपनी इच्छा पर बोलनेवाला, अपनी इच्छा पर चलनेवाला, जो अपनी ही शरण में जाता है, शरण है।
- ढोंगी भक्तों का संग बिन पानी तालाब के समान है। सच्चे भक्तों का संग अमृत का सर।
- जिव्हा से बोलने से पहले तुम्हारे अंदर जो 'वह' है उसे एकबार पूछ लो।
- सुख और दुःख दोनों जीवन भर साथ रहेंगे। उनसे निपटने 'अंतरमन' से सहनशिल को पाना चाहिए।
- यदि 'उसको' चाहिए तो, न माँगने पर भी रोशनी को किवाड से बरसायेगा।
- जो 'उसे' जानते हैं उन्हें अन्य किसी का संग न चाहिए। किसी की अधीनता नहीं चाहिए।
- अर्चन-अर्पण और अनुभाव को हमेशा अंतरंग में चलते रहना चाहिए।
- समाज तन है तो सत्यवान् उसकी आत्मा है।
- शून्य को जानना चाहिए और शून्य में समा जाना चाहिए। शून्य में शून्य को निःशून्य हो जाना चाहिए।
- हमें मालूम है जो दीखता है, परंतु उसके पीछे जो है उसका पता नहीं चलता।
- निर्मल वस्तु का साक्षात्कार ही ब्रह्मज्ञान है, ब्रह्मानंद है।

- 'सुमति' राजहँस के समान है। वह सार-असार, दूध-पानी का ग्रहण कर सकता है।
- पूजा-विधान के कई प्रकार हैं। परंतु मन की पूजा ही सच्ची पूजा है।
- मन का मैल जब छूटता है तभी महादेव से मिलना संभव है। केवल बाह्य पूजा थोथा है।
- आध्यात्मा-बोधन चाहिए ही। परंतु उसे प्रशांत सागर के समान बह जाना चाहिए। उसे तरंगों को न छेडना चाहिए।
- स्वर्ग और नरक ऊपर नहीं, नीचे नहीं, वहाँ नहीं, यहाँ नहीं। दोनों हममें ही हैं।
- समाज देवता 'उसका' साकार रूप है। सेवा और त्याग उसके लिए अर्पित है।
- ज्ञानचक्षु के अंदर का शिव दीख सकता है। आनंद दे सकता है, आगे बढ़ सकता है।
- जो शरीर से छिपके हैं उन्हें धो सकते हैं। मगर मन से छिपके को धोना कठिन है।
- समाज के विकास के लिए सेवा-त्याग ही सोपान है। उनपर चढ़ने के लिए हठ और बल चाहिए।
- अपने आप में रहना ही ध्यान, मनन, चिंतन, प्रार्थना और भजन है। इन सब से श्रेष्ठ है मौन।
- बछड़ा बैल न बनेगा ? बीज पेड़ न बनेगा ? उसी तरह हमें पग पग पर बढ़ना चाहिए। शरीर को झाड़कर ऊपर उठना चाहिए।
- यह विश्व ही भगवान का घर है। हम सब किरायेदार हैं। इसका ज्ञान अज्ञानी मानव में कहाँ है ?
- बडे-छोटे को मापने के लिए मापदंड़ कौन सा है ? कथनी-करनी, करनी-कथनी जिनमें अभिन्न होत ही बड़े हैं।
- अंग-संग फिर भव की ओर ही। लिंग संग अभव की ओर है। यह बात सदा ध्यान में रहे।
- करो परंतु मैंने किया यह भाव न रखो। मिलो परंतु मिलन का अहं न रहे। ज्ञान पाओ। परंतु ज्ञान का अंहकार न रहे। उसमें समझाओ।
- योगी के दर्शन कैलास प्रप्ति का मार्ग है। कैलास का ज्ञान है।
- धर्मवान के सामने परब्रह्म भी कांप उठा। हरिहर सुरलोग भी ड़र गये।
- 'शील' के लिए स्त्री-पुरूष, धनी-रंक का भेद कहाँ ?
- मन का महादेव में समा जाना ही समाधि स्थिति है।
- ज्ञानियों का मार्ग सदा अपनाओ। अच्छाई को पाओ।
- अच्छे भाव से देखने की दृष्टि अच्छी है। दृष्टि के समान सृष्टि है।
- मारना, पीटना, काटना आदि भाव जिसको रूढ़ है वह कहीं भी रहे और कैसे भी रहे तो क्या ? मगर बाहर जैसा दीखता वैसे ही रहेगा यह न कहा जा सकता। जैसे नारियल का पानी ?
- पवित्रता कहने से न होती। पूछने से न मिलती। वह साधना के द्वारा री संभव है।
- बोल, चाल और मन तीनों को साथ रहना चाहिए। सरल रेखा में हो। मगर आज वे वक्ररेखा में हैं। चक्ररेखा में हैं।
- पानी में उतरने से पहले उसकी गहराई का ज्ञान रहना चाहिए। अपनी गहरायी का भी ज्ञान रहना चाहिए।

- तत्व का उपदेश आसान है। परंतु आचरण में लाना कठिन है। कठिन होने पर भी न छोड़ना चाहिए। ड़रकर पीछे हटना नहीं चाहिए।
- योगीश्वर की महिमा वागीश्वरों से कैसे संभव है ?
- ज्ञान भगवान का मनुष्य को दिया वर है। विस्मृति मानव को दिया वर भी है और अभिशाप भी।
- गुरूवचन से बढकर अमृत कहाँ ? गुरू करुणा के समान सुख कहाँ ?
- दीखकर छिपनेवाला, छिपकर दीखनेवाला सुख सुख नहीं है। वह मृग मरीचिका है।
- हमारे साथ आनेवाले और हमारे साथ रहनेवाले सिर्फ दो हैं -एक सचाई, दूसरी बुराई। अन्य कोई नहीं।
- हमारे रोज के अच्छे बुरे कार्य के लिए हमारा मन ही साक्षी है।
- पेट की भूख स भी प्रणियों में है। मस्तिष्क की भूख, मनुष्य के लिए भगवान की देन है।
- यम के पाश में कोई भेद नहीं। शिव की सृष्टि में यह तारतम्य क्यों? यह एक पहेली है।
- सूर्य को बादल के छिपने से क्या होता है ? सदगुणी को दुख दर्द आये तो क्या?
- गुरुकृपः मुक्ति का मूल है। मुक्ति के लिए भक्ति मूल है। भक्ति के लिए भाव।
- परहित करने में ही भगवान को पाना, दान या दासोह जीवन है। परिपूर्ण जीवन है।
- पैदा होते हैं नंगे ही, मरते भी खाली हाथ नंगे ही।
- अच्छे रास्ते में चलने का उपदेश देना बड़ी बात नहीं। चलकर दिखाना सत्पथ है।
- इच्छा चाहिए अच्छी चीज के लिए। परंतु लोभ न हो। निराश भी ठीक नहीं।
- कोई भी चीज आसानी से न मिले। क्यों कि उससे उसका मूल्य व महत्व का पता न चलता।
- इस देह रूपी आलय को परमात्मा का देवालय बनना है।
- जैसे सुगंध को छिपा न सकते वैसे ही दुर्गंध को भी छिपा न सकते हैं।
- अंदर की आत्मा को देखने दर्पण अभी न मिला है। जिनको मिला होगा उनका भी पता न मिला है।
- गुण-दोष, रात-दिन के समय साथ साथ है। रात्री के बाद दिन का मूल्य बढ़ता है। दोष मिटने पर गुण का मूल्य बढ़ता है।
- इस देह के मन, बुद्धि, इंद्रिय आदि सब आत्मा के अधीन है। इसलिए वह वही है।
- चिंता और चिता में कोई फर्क नहीं। दोनों दहनशील है। एक शीघ्र जलता है तो दूसरा धीरे-धीरे।
- कल कल कहते रहोगे तो कल तक तुम रहोगे इसकी क्या ग्यारंटी है ?
- भगवान से भेजे हवा-रोशनी, अग्नि-जल नामक वैध्य को किसीने बिल चुकाया है ?
- सब की सुनिये और आखिर 'उसकी बात' पर चलिए।
- भोग का आनंद भी आनंद ही। परंतु वह क्षणिक है। त्याग का आनंद शाश्वत होता है।
- ज्ञान से भरा जीवन तालाब भरकर बहने के समान है।
- समाज रूपी भवन के निर्माण में छोटा पत्थर भी बड़े पत्थर के समान ही महत्वपूर्ण है।

- संपत्ति की सफलता ऐशो आराम में नहीं। कल्याण कार्य में हैं। आदर्श जीवन में है।
- हम हर क्षण मृत्यु की ओर बढ़ रहे हैं। अच्छे कार्य के लिए देरी क्यों ?
- भगवान को कैसे दे सकते हैं ? उसे कैसे देख सकते हैं ? दरिद्र को देना भगवान को देना है।
- सन्मार्ग की आदत तो पड़े। उसी रास्ते में चले। इससे कम से कम दुष्ट तो बनेंगे नहीं।
- वचन वाडमय की गहराई को जो उसमें उतरे हैं वे ही पहचानते हैं, जानते हैं।
- जो कहने के मूल को जानता है वही निजगूरु है, सदगुरु है।
- अच्छे काम के लिए सहयोग और बुरे कार्य के लिए विरोध दोनों कर्तव्य ही हैं।
- बुद्धि का मंथन करनेवाली और हृदय को खिलानेवाली पुस्तकें ही श्रेष्ठ हैं। लिखनेवालों को सतर्क रहना चाहिए।
- भगवान पर विश्वास ही आस्तिकता है और अविश्वास ही नास्तिकता है।
- ब्रह्मांड के समान ही पिंडाड है। यह ब्रह्म की अद्भूत सृष्टि है। महान सृष्टि है।
- सिर्फ भवसागर में तैरनेवाले के लिए धर्म का मार्ग स्पष्ट न दीखता है।
- चढे ऊँचाई को एक क्षण की उदासीनता नष्ट कर सकती है। फिसलना बहुत आसान है। घडे भर दूध में एक कण नमक काफ़ी है खराब करने को।
- बदले वेष से ड़रकर चलो, दोष से घृणा करते चलो। 'उसके' कहे अनुसार चलो।
- संपत्ती अहंकार का मूल है। अहंकार विगति के लिए पासपोर्ट है।
- दूध स्तर स्तर पर संस्करित होकर घी बनकर फिर दही बन सकता है ?
- मन से डरकर चलना अच्छा है। लोगें से डरकर चलना पराजय है।
- लौकिकों से मिलना चाहिए। मिलकर भी अलग रहना, वही सही कार्य है।
- जिसको जानना कठिन है ऐसे घन तत्व को जानकर भी अनजान-सा रहना चाहिए।
- स्थावर का नाश एक न एक दिन होता ही है। परंतु जंगम अविनश्वर है।
- 'आत्मसाक्षी' के बराबर कौन-सा है। उसका मूल्य जाना जा सकता है ? वह परमात्मा का स्थान है।
- गुण को गुण और सद्गुण को न्याय मानना विवाद नहीं, सत्य है।
- मृत्यु आज मुझ पर, कल तुम पर। ऐसे ही बारी बारी से।
- हम जितना भी ऊपर उठे हम से पहले ही ऊपर उठे और भी लोग होंगे ही।
- 'हंसक्षीर' न्याय हम सबका दिशादीप है।
- देहाभिमान छोड़कर आत्माभिमान से आगे बढ़े तो पूर्णानंद निश्चित है।
- बाहर जैसा रहना है रहे। अंदर 'मैं' कुछ नहीं हूँ यह ज्ञान सदा रहे।
- शरीर को आचार, मन को विचार और आत्मा को ज्ञान जैसे शोभा देते हैं, वैसे ही शरणों का संग इन सब से श्रेष्ठ है।

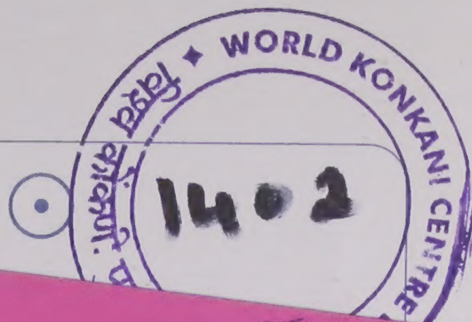
- 'मैं' अपने को ढूँढ़ ही लूँगा। 'मैं' मुझको ही न प्राप्त हो ऐसा है यह जीवन।
- बिछुआ का गुण काटना है। मनुष्य का गुण रक्षा करना है। अतः दोनों का गुण अलग अलग।
- मैं किसी के पक्ष में नहीं। सबके साथ हूँ। और मैं मैं ही हूँ।
- 'मैं' मेरा यह भाव ही दुःख का कारण है। सब कुछ तुम्हारा, कहना सुख का मार्ग है।
- शरण सिद्धांत केवल निराकरण का सिद्धांत नहीं। उदात्तीकरण का सिद्धांत है।
- व्यक्तिगत प्रगति सीमित होती है। समष्ठिगत प्रगति ही श्रेष्ठ है। अतः समष्ठिगत प्रगति के लिए काम करना चाहिए।
- ज्ञान ज्योति है। अज्ञान अंधकार है। ज्योति छोटी हो या बड़ी हो, वह अज्ञ तम हरने के लिए है।
- हीनमन की भक्ति फटी बोरी के समान है। उसमें संचय शून्य होता है।
- पेट की भूख मिट सकती है। परंतु हृदय की भूख मिट न सकती।
- न स्वर्ग ऊपर है, न नरक नीचे है। सब इधर ही है।
- सत्य के अनुसार चलो। असत्य से डरो। तब शाश्वत तत्व की प्राप्ति होती है।
- ब्रह्मचर्य-पालन कठिन है, मगर असंभव नहीं। वह किसी की बपौती नहीं।
- मुक्ति-पथ से पीछे हटना नहीं चाहिए। मुक्ति पथ में सदा आगे बढ़ना चाहिए।
- नर कब हर होगा? जब हृदय का मैल धुल जायेगा और जब आंतरिक संपदा बढ़ेगी। फिर भी हर नर नहीं हो सकता।
- देव-दानव-मानव इन तीनों में देव वैसे ही रहेगा। दानव का पतन होगा। मानव उन्नति की ओर बढ़ता रहेगा।
- लोभ ही दासत्वं का मूल है। लोभ मुक्ति ईश्वरत्व के लिए सीढ़ी के समान है।
- बल अनेक प्रकार के होते हैं। ब्रह्मचर्य का बल ही श्रेष्ठ है। उसके बराबर अन्यबल नहीं।
- ईश निर्मित इस जगत् में कोई भी चीज निरुपयोगी नहीं। नमक का मूल्य कम होगा परंतु उसके बिना खाना कैसे बनेगा ?
- इंद्रियों का निग्रह कर ऊपर उठना चाहिए।
- ज्ञानी मानव विस्मृत क्यों होता है ? अज्ञानी क्यों बनता है ? फिर दुःखी क्यों होता है।
- मरकर जीने बहुत साधना करनी पड़ती है। जीकर मरने कोई साधना आवश्यक नहीं।
- लिंगधारण से लिंगायत नहीं। लिंग गुण से लिंगायत बनेगा। वैसे ही सभी धर्म का एक नियम होता है। धर्म चर।
- जीवन्मुक्ति मरने के बाद नहीं - जीवन्त रहते ही उसकी इच्छा के अनुसार जीना। ज्ञान का पता ज्ञानी को देखते ही चलता है।
- मूल्य मस्तिष्क का होता है। देह या उसके दिखावे के लिए नहीं।
- धर्म के लांछन से कोई धर्मात्मा नहीं। धर्म के ज्ञान की प्राप्ति से ही कोई धर्मात्मा है।

- परूष के स्पर्श से लोह सोना होता है। काँसे के स्पर्श से नहीं। वैसे ही है गुरुस्पर्श।
- निंदा मत करो। प्रशंसा करके मत पाओ। अधीन में रहकर जीवन मत बिताओ।
- सब में सबकुछ न अच्छा होता है न बुरा। अच्छाई को लीजिए। जो नहीं चाहिए उसे मेरी झोली में डालिए।
- भव सागर के जीवन रूपी तटपर स्तुति-निंदा लहरों के समान उठती हैं। उससे न अधिक खुश होना, न अधिक दुःखी। इस जगत में रहकर जीतना चाहिए।
- जो होना है वह नहीं होता। जो न होना है वह होता है। यही है नटराज शिव की लीला।
- प्रकृति पग पग पर बदलती रहती है। मानव तो विकृति ही करता है। संस्कृति हीनता ही उसका काम है।
- जिसको नरक का रास्ता पसंद है उसे शिव का रास्ता कैसे पसंद आयेगा।
- नींद से उठना अलग है। जागृत होना अलग है। परंतु नींद का बहाना करनेवालों को ठीक करना कठिन है।
- आप ऊपर चढ़ते रहिए। वैसे ही दूसरों को भी चढ़ने में मदद कीजिए। यही धर्म है।
- आप अब आप नहीं। आपके पीछे लोग जो आपके बारे में कहेंगे वही आप हैं।
- गाँव के रास्ते कितने क्यों न होते ? जाति, मत, पंथ, संप्रदाय कितने भी क्यों न हो? उन सब का लक्ष्य एक ही है। और एक ही होना चाहिए।
- हमारी आँखों का परदा हटाने गुरु ही संत है महंन है।
- कमल कीचड में पैदा होता है। परंतु वह भगवान को अर्पित होता है।
- फूल को क्या पता नहीं कि खिलने से उसका अंत होगा? तन भी वह खिलता है। हँसता है। ऐस ही हमारा जीवन होता है।
- उपकार करना सीखना हो तो पेड़-पौधे, हवा-आग, गाँव-बैल की ओर नजर डालना चाहिए।
- किसी से पूछ कर न कोई आये हैं और न कोई जायेंगे। सबके अपने ही रास्ते हैं।
- कौड़ी का काम नहीं क्षण भर की फुरसत नहीं।
- शेर क्या घास खायेगा और हाथी क्या माँस खायेगा? पशु-पक्षी अपने स्वभाव को छोड़ते नहीं। पर मनुष्य क्यों अपने स्वभाव को छोड़ता है ?
- आत्मानंद की फसल की रक्षा करनेवाला गृहस्थ, सन्यासी के बराबर है। वह भी शापानुसमर्थ है।
- ज्ञानहीन को पशुवत् कहने से पशु का अपमान होगा।
- स्वस्वरूप ज्ञान पाने तक भव-बंधन से मुक्ति कैसे ?
- सकल जीवों को अपने जैसे समझकर चलना ही नीति है, धर्म है।
- संकष्टों के जाल में फँसने पर भी 'शिव' नाम मत छोड़ो।
- यह जग ही गुरू है। गुरू ही जग है। तब अंतर कहाँ ?
- प्रकृत को विकृत करनेवाला महापापी है। अधर्मी है।



- मन रिक्त हो तब 'वह' रहता है। मन जब भरा हो तो वह वहाँ क्यों रहता है।
- परमयोगी स्थित-प्रज्ञ होता है। उसे पालकी और चिता दोनों बराबर है।
- झुकना ? पके केलों के झुकने के समान होना चाहिए। उसी तरह जीना सीखिए।
- भगवान को और मृत्यु को कभी न भूलिए।
- आपने जो उपकार किया है और जो अपकार पाया है दोनों को भूल जाइए। तभी जीव को शांति है।
- हमारा कैसा देश? कैसे लोग? बाहर से सुंदर और अंदरसे टुकडे टुकडे। ऐसा क्यों?
- मत-धर्म व्यक्ति से बने हैं। व्यक्ति अपूर्ण होता है। इसी लिए उनमें भी अपूर्णता रहेगी।
- काषायवस्त्र धारी सब भगवान के लिए समीप हो तो अन्य रंग के कपडे क्यों ?
- मुख की मलिनता दर्पण में दीखती है। अतः मुख देखने के लिए आईने के समान शिष्यों के लिए गुरु है।
- अंधा-पैसा जीवन के लिए आसरा है। परंतु उसके पीछे दौडने से वह विनाशकारी है।
- लक्ष्य अच्छा हो यह काफी नहीं। साधना भी अच्छी हो और साधना करने का हठ भी हो।
- जीव और शिव का मिलन ही मुक्ति है। यही हमारा लक्ष्य है।
- चित्तवृत्ति निरोध केवल बाह्य से ही नहीं उसका संबंध अंतरंग से भी है।
- नाशवान सब असत्य है। अविनाशी ही सत्य है। इसकी खबर सदा हो।
- कायिकश्रम कोई भी हो ? कोई भी करें ? उसके आचरण में प्रमाणिकता चाहिए।
- केवल एकांत में तप करना ही तपस्या नहीं।
- गरीबों के शोषक धनमद से मत्त धनियों को शिव देख लेगा।
- आप और अपने सब यदि पवित्र जीवन जी सकते हैं तो वही स्वर्ग है। न जी सकते हैं तो नरक है।
- आँख, कान, पैर, हाथ सब दो दो। परंतु उसके कार्य में भिन्नता नहीं। गुरु अलग अलग होने पर भी उन सबका कार्य एक ही है न?
- पाँचों उँगलियाँ अलग अलग दीखने पर भी, कौर उठाते समय वे सब सम होते हैं।
- बरबाद होकर फिर सुधारने से बरबाद न होना बुद्धिमानी है। गिरकर उठने से न गिरना बुद्धिमानी है।
- दुष्टशक्ति के लिए समय रहता है। शिष्ठशक्ति के लिए सहिष्णुता मुरव्य है।
- मानव जन्म की सफलता परोपकार में है, विफलता स्वार्थ में।
- जो हमेशा रहता है, बदलता नहीं, वही परवस्तु है।
- हम और आपको समय की सीमा है। जो शाश्वत है उसे समय की सीमा नहीं। वही [illegible] है।




WORLD KONKANI CENTRE
1402



श्री वचन

मोती सी बात इन्हीं को कहते है न?
हर वचन में जीवन का सार सर्वस्व है।

-हा.मा. नायक

श्री वचन अनुभव और अनुभाव के मूल से निकले
सूत्र हैं जो अखण्ड मनन के लिए योग्य है।

-जी. एस. आम्र

श्री वचन बिजली की कौंध है।

-शंकर मोखाशि पुणेकर

श्री वचन मोती की बात, मोती ही है।

-डॉं. आर.वी. भंडारी

श्री वचन देशी-आध्यात्म-अनुभव साहित्य है।
अनुभवों की खान है। जीवन में दीप बन
प्रकाश फैला सकते है।

-अ. कृष्ण भट्

श्री वचन उच्च स्तर के चिंतन का प्रतिफल है।
जीवन को दिया दिखा सकते हैं।

-मळलि वसंत कुमार

श्री वचन शरणों के तत्व की बातें हैं। इह और पर
दोनों के जीवन के लिए पथ प्रदीप हैं। छोटे
होकर भी विशिष्ट अर्थवाले से ज्ञान के
वचन दिव्य प्रकाश देते हैं।

-शं.गु. बिरादर

